‘नवोन्वेष: जीने का एक तरीका’ विषय पर विडियो सम्मेलन के माध्यम से सिविल सेवा अकादमियों में उच्च शिक्षा के छात्रों और संकायों में अनुसंधान संस्थाओं और अधिकारी प्रशिक्षुओं को भारत के राष्ट्रपति, श्री प्रणब मुखर्जी का संबोधन

राष्ट्रपति भवन : 10.08.2016

1. नए अकादमक सत्र के आरंभ में आप लोगों के साथ वार्ता करने के इस अवसर पर मैं बहुत प्रसन्न हूं। शुरुआत में मैं आप सभी छात्रों का स्वागत करता हूं जो वश्ववद्यालयों और उच्च के अन्य केंद्रों में नए हैं। मैं उन अधकारी प्रशक्षुओं को भी शुभकामनाएं देता हूं जो अपने निर्धारित अकादमयों में उनका परिवीक्षाधीन प्रशक्षण ले रहे हैं। मैंने जनवरी, 2014 में उच्च शक्षा में अकादमक संकाय को संबोधत करने का अभ्यास आरंभ कया। यह इस प्रकार का छठा मौका है और मैं यह स्वीकार करता हूं क मैं ई-प्लेटफॉर्म पर इस आवधक बातचीत के लए उत्सुक हूं। मैं राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क और राष्ट्रीय सूचना वज्ञान केंद्र टीमों के साथ जोड़ने के लए आप सभी को धन्यवाद देता हूं।

2. भारत वश्व का सर्वाधक युवा आबादी वाला देश है। भारत के 1.8 अरब की कुल आबादी में छह सौ करोड़ से अधक व्यक्ति 25 वर्ष के नीचे हैं। हमारे पास पर्याप्त संख्या में रचनात्मक, आतुर जिज्ञासु व्यक्ति हैं। आज के नेटवर्क युक्त वातावरण में हमें ऐसी युवा शक्ति की आवश्यकता है एक अभलाषी भारत की पूर्ण क्षमता को उपयोग कर सके। इसके लए हमारे रोजमर्रा के जीवन के एक भाग के रूप में रचनात्मक सोच और नवोन्वेष की अभलाषा होनी चाहिए। इसलए मैंने ‘नवोन्वेष: जीने का तरीका’पर आज आपसे बात करने के लए वषय चुना है।

मत्रो,

3. पछले कुछ दशकों में भारत का आर्थक निष्पादन सराहनीय रहा है। तथाप हमने पर्याप्त समस्याओं जैसे गरीबी, असमानता, बेरोजगारी, संसाधनों की कमी और खराब अवसंरचना का सामना कया है। जबक हमें वश्व स्तरीय अवसंरचना की तीव्र रचनात्मकता और इसे बनाए रखने रखने के अत्याधुनिक प्रौद्योगकयों की आवश्यकता है, हमें वकास की प्रक्रया में कमजोर वर्गों को को शामल करने संबंधी समाधानों की भी आवश्यकता है। जैसे-जैसे गणतांत्रिक अभलाषाएं जन्म लेती हैं, हमें असमानताओं को कम करने के लए नए तरीके ढूंढने होंगे। अनेक बार हम केवल अपने अपने प्रयासों को दोगुना करके समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते। हमें अपने

दृष्टिकोण, डजायन, वतरण के तरीके और साधनों में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। हमारी परिस्थितियां हमारे आकार, ववधता और जटिलता के कारण अपूर्व हैं। वकास के लए वैश्विक मॉडल को अपनाना सीमत उपयोग का सर्वोत्तम उपाय हो सकता है। हमारे वकास आदर्शों को हमारी जनता की अभलाषाओं से जोड़ना होगा और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करना होगा। नवोन्वेष से हमारी अनेकता की रक्षा होनी चाहिए और समाज के वस्तृत क्षेत्र को लाभ मलना चाहिए।

मत्रो,

4. नवोन्वेष के अनेक आयाम हैं। कुछ नवोन्वेष प्रकृति से परिवर्तनीय हैं जहां परिवर्तन करना हानिकारक है। सामाजिक-आर्थक परामड के ऊपर से नीचे तक करोड़ों लोगों की दैनिक जीवन को को प्रभावत करते हुए इसके परिणामों सहित डजिटल क्रांति ऐसा ही एक उदाहरण है। उसके बाद समावेशी समर्थक नवोन्वेष हैं जो मौजूदा प्रौद्योगकी के संशोधन के द्वारा निम्न आय समूहों और मध्यम वर्ग के लए वहनीय बनाते हुए एक उत्पाद के मूल्य और सेवा को महत्त्वपूर्ण रूप से कम करते हैं। इसमें मतव्ययी नवोन्वेष शामल हैं जो एक कम लागत वाली कार अथवा एक कम लागत लागत वाली एयरलाइन की तरह एक उत्पाद की कार्यक्षमताओं को बनाए रखते हैं। एक अन्य श्रेणी के नवोन्वेष में सामाजिक नवोन्वेष हैं जिनका प्राथमक उद्देश्य उन ग्राहकों को सामाजिक रूप रूप से उपयोगी सेवाएं प्रदान करना है जो भुगतान करने की स्थिति में नहीं हैं। तथाप नवोन्वेष का एक अन्य आयाम 'जमीनी' नवोन्वेष जो वद्यमान प्रौद्योगकी में एक मध्यम और निम्न आय समूह के लए वहनीय उत्पाद और सेवा की लागत को महत्त्वपूर्ण रूप से कम करते हैं जो उन स्थानीय समुदायों द्वारा आरंभ कया जाता है जो अधूरी सामाजिक आवश्यकताओं और अपर्याप्त वतरण प्रणाली के अंतर को अपने लए रचनात्मक समाधानों को वकसत करके समाप्त कर देते हैं। हैं।

मत्रो,

5. आज मैं आप लोगों के साथ कुछ ऐसे पाठ साझा करना चाहता हूं जो हमने राष्ट्रपति भवन में वभन्न पहलुओं के द्वारा पछले चार वर्षों में पढ़े हैं। मैं उन चुनौतियों का भी जिक्र करना चाहूंगा जो जो सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति में भारत को अधक करुणामयी और सहयोगी बनाने से रोकती है। मैं इस बात से प्रसन्न हूं क प्रधान मंत्री ने हाल ही में अपने मन की बात में देशवासयों से से नवोन्वेष पारितंत्र के सर्जन के लए आग्रह कया है। उन्होंने एक बहुत ही सकारात्मक पहल अटल नवोन्वेष मशन की बात की जो पूरे देश में 'नवोन्वेष' को और 'स्टार्ट अप' दोनों को प्रोत्साहन देने के लए थी। मैं नवोन्वेष के द्वारा अग्रणी होने के संदेश के उद्देश्य से पूर्णत: सहमत

हूं। बच्चों की रचनात्मकता को बाहर लाने का वचार भी बिलकुल सही है। बच्चों में बचपन से ही कल्पना, प्रयोग, नवोन्वेष और उद्यमता के वचार डाले जाने चाहिए। मुझे बताया गया है क वज्ञान वज्ञान एवं प्रौद्योगकी वभाग एनआईएफ के समर्थन से एक 'मलयन माइंड्स ऑफ एंटी नेशनल नेशनल एंस्पीरेशन एंड नॉलेज' मानक कार्यक्रम आरंभ करने जा रहा है ताक एक करोड़ से आधे में में से प्रत्येक से कम से कम दो नवोन्वेष वचार प्राप्त कए जा सकें और उनमें से योग्य वचारों को आगे बढ़ाया जा सके।

मत्रो,

6. अगला प्रश्न है क हम समेकत नवोन्मेष आंदोलन को आगे कैसे ले जाएं? भारत कुछ उच्च तकनीकी नवोन्वेषों में पछड़ा हो सकता है परंतु जब बात रोजमर्रा की समस्याओं के वकास की आती है तो हमने अलग कुछ कर दिखाया है। मैं पछले तीन वर्षों से एक आवासीय कार्यक्रम के अंतर्गत राष्ट्रपति भवन में मेरे अतिथयों के रूप में लेखकों और कलाकारों ने नवोन्वेष वद्वानों का स्वागत करता आ रहा हूं जहां नवोन्वेषी वचारक 'अपनी रचनात्मक बैट्रियों को रिचार्ज' करने के लए आते हैं। मैं शक्षावदों,निगम के नेताओं और सामुदायिक नेताओं का आह्वान करता हूं क वे हमारे देश के रचनात्मक और नवोन्वेषी जनता तक इस पहचान को पहुंचाने के बारे में सोचें। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क आप कतने व्यस्त हैं, एक वर्ष में कुछ समय अपनी कल्पना को सजीव करने के लए ऐसे लोगों के लए भी निकालें।

7. रचनात्मक और नवोन्वेष द्वारा वकासात्मक भाग्य की जिम्मेदारी लेने के कारण उनकी का सम्मान करने के लए, राष्ट्रपति भवन नवोन्वेष का एक साप्ताहिक उत्सव मनाता आ रहा है। इस उत्सव में वैश्विक गोलमेज और अन्य वार्तालाप सत्र, बिक्री योग्य उत्पादों में अपने वचारों को बदलने के लए नवोन्वेषकों, उद्यमयों और फाइनेंसर्स को एक प्लेटफॉर्म प्रदान करते हैं।

8. उच्च शक्षा के 117 केन्द्रीय संस्थानों के कुलाध्यक्ष के रूप में मैंने इन संस्थानों को नवोन्वेष क्लब स्थापत करने के लए कहा। केन्द्रीय संस्थानों में अब उच्च शक्षा के ऐसे 85 से अधक क्लब, नवोन्वेष इन्क्यूबेटर और हब हैं।

9. 19 मई, 2016 को राष्ट्रपति भवन एक स्मार्ट टाउनशप बन गया। हमारे लए एक स्मार्ट टाउनशप का अर्थ एक मानवोचत, उच्च तकनीकी युक्त, वरासती और खुशहाल टाऊनशप है जो एक ऐसे जीवन की संवर्धत गुणवत्ता निश्चित करता है जो इसके निवासयों की खुशहाली में सहायक है। मैं समझता हूं क हमारे स्मार्ट शहर, कस्बे और ग्राम जैसा हम उनका वकास करते हैं, वे भी मानवोचत, उच्च तकनीकी युक्त और खुशहाल होने चाहिए जो प्रौद्योगकी संचालत और सहानुभूतिशील समाज की रचना कर सकें।

मत्रो,

10. मैं अपने जीवन काल में एक वकसत भारत देखने की उम्मीद करता हूं। हमारा सामूहिक सपना तभी पूरा होगा जब हम सभी नागरिकों को परिरक्षा, स्थिरता और बदलाव का मार्ग प्रदान करते हुए उनके रचनात्मक वचारों पर कार्य करेंगे।

12. मैं भारत के इससे भी अधक समावेशी, ववध, स्थिर और नवोन्वेषक समाज की ओर बढ़ने से से होने वाले लाभ के लए नौ सूत्रों का सुझाव देता हूं :

(क) एक : जब बच्चे हमसे ऐसे प्रश्न पूछते हैं जिनका हमारे पास कोई उत्तर नहीं होता तो हमें की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। हमें अपनी अज्ञानता को स्वीकार करना चाहिए और उन लोगों से सूचना का संदर्भ लेना चाहिए जो जानते हैं और उनकी जिज्ञासा को बढ़ा सकते हैं। जब तक हमारे बच्चे प्रश्न पूछना, प्रयोग करना नहीं सीखेंगे उनकी कल्पना का वकास नहीं होगा; और उनकी नवोन्वेषी क्षमता बाहर नहीं आ सकेगी।

(ख) दो : हमें अपने उन वश्वासों पर प्रश्नचह्न लगाकर एक वैज्ञानिक व्यवहार को बढ़ावा देना और लागू करना होगा जो वैज्ञानिक तरीके से सोचने के योग्य नहीं हैं। भावी समाज अपरंपरागत वचारों पर निर्भर करते हैं। वे असफलताओं से नहीं डरते, वे जोखम उठाते हैं और जानबूझकर की गई गलतियों को माफ करते हैं।

(ग) तीन : स्कूलों, कॉलेजों और अनुसंधान संस्थाओं में नवोन्वेष क्लब और परिवर्तनीय प्रयोगशालाएं स्थापत की जानी चाहिए। युवाओं को खोजने, प्रचार-प्रसार करने और समावेशी नवोन्वेषों की प्रशंसा करना सीखना चाहिए और उन्हें अपने क्षेत्रों में समुदायों की अपूर्ण सामाजिक आवश्यकताओं की समझ होनी चाहिए। मैंने अपने गांवों में धान का पौधा रोपते देखा है जब महिलाएं घंटों धान के पौधारोपण के लए जल में पैर डाले हुए, दर्दनाक स्थिति में कमर झुकाए हुए कार्य करती हैं। हम वहनीय मैनुअल धान पौधारोपण में सुधार और डजायन क्यों नहीं कर सकते? महिलाओं द्वारा कए जाने वाले कार्यकलापों में प्रौद्योगकयों के कदम इतने धीमे क्यों हैं? आइए, हम इन समस्याओं को समयबद्ध तरीके से निपटाने की दिशा में कार्य करने के लए प्रतिबद्ध हों। हमें अपने देश के रोजगार वर्गों, वयस्कों और वशेष रूप से अयोग्य व्यक्तियों के सामना की जा रही समस्याओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। केवल तभी करुणात्मक रचनात्मकता वकसत होगी।

(घ) चार : हमें औपचारिक और अनौपचारिक ज्ञान प्रणालयों के बीच व्यवहार्य और स्थिर सेतु का निर्माण करना होगा। जलवायु परिवर्तन के जोखमों के साथ और क्षतिज पर बड़े पैमाने पर बढ़ती अनिश्चितता; सदियों से इन अनिश्चितताओं के साथ समुदायों के ज्ञान को अनदेखा नहीं कया जा

सकता। जैसे-जैसे संसाधनों का अभाव होगा, हमें अधक से अधक साझेदार होना सीखना होगा। निजी उद्यमता से हटकर सार्वजनिक और सामान्य हित को बढ़ाने वाली मूल्य प्रणाली को व्यक्तिगत हित में सशक्त करना होगा।

(ङ) पांच : हमारी रोजगार गारंटी योजनाओं और कौशल वकास को क्रयान्वित करते हुए हमें सांस्कृतिक, प्रौद्योगकीय और पारंपरिक कौशल को वधवत मान्यता देनी चाहिए। वास्तव में कोई कोई भी अकुशल नहीं है। ज्ञानवान समाज को प्रत्येक व्यक्ति की अद्वतीय क्षमता को उपयोग में लाना होगा। हमें कलाकारों, कार्य निष्पादकों, वास्तुकारों आदि को स्कूल में हमारे बच्चों को उनकी कला सखाने के लए प्रोत्साहित करना होगा और उस युवा पीढ़ी को पोषत करना होगा जो सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था में योगदान देना चाहती है।

(च) छह: मैं पछले चार वर्षों से उच्च शक्षण के वभन्न संस्थाओं के कुलपतियों और निदेशकों से बातचीत करता रहा हूं। मैंने उनसे शक्षा के प्रत्येक सबसेट में नवोन्वेष को प्रोत्साहित करने के लए लए दबाव डाला है ताक युवा पीढ़ी एक रचनात्मक और समस्या के समाधान करने वाले मस्तिष्क मस्तिष्क में वकसत हो सके। हमें अपनी शैक्षक प्रणाली को समकालीन सामाजिक अपेक्षाओं के अनुकूल बनाना होगा।

(छ) सात : हम अपने रोजमर्रा के जीवन में बहुत सी छोटी-छोटी समस्याओं का सामना करते हैं परंतु पद्धतिबद्ध समाधानों की अपेक्षा हम इन समस्याओं के साथ रहना सीख जाते हैं। हमें अपनी मानसकता में गहन रूप से अंत:स्थापत जड़त्व से निपटना होगा और अपने आप से लगातार प्रश्न प्रश्न पूछना होगा : मैं इस समस्या को कैसे सुलझा सकता हूं? क्या मैं अब भी प्रयास कर सकता हूं? इसमें कोई हर्ज नहीं यदि मैं अनेक बार असफल भी रहूं।

(ज) आठ : हमें तात्कालकता की समझ का वकास करना होगा। समय कसी का इंतजार नहीं करता। एक भयंकर स्पर्द्धात्मक वातावरण में जल्दबाजी में होना और अधीर होना एक आवश्यक गुण है।

(झ) नौ : हमें अदक्षता, क्षुद्रता और कार्य की बेकार गुणवत्ता को सहन नहीं करना चाहिए। वस्तुएं और सेवाएं प्रदान करते हुए हमारे प्रयास सौंदर्य और कार्य निष्पादन के उच्च मानदंड हासल करने के होने चाहिए।

13. इससे भी कहीं अधक है जो कया जा सकता है और कया जाना चाहिए। मुझे भारत को एक रचनात्मक, करुणामयी, सहयोगी और नवोन्वेषी समाज बनाने के लए आपके वचार सुनने में प्रसन्नता होगी। मेरी सरकार आपके वचारों को रचनात्मक ढंग से उपयोग में लाना चाहती है। इससे भी अधक श्रेष्ठ भवष्य के लए ज्ञान और संस्कारों से समृद्ध परंतु आर्थक रूप से गरीब हमारे

हमारे समर्थन के पात्र हैं। अगर हम अपने जड़त्व पर कुछ हद तक वजय पा सकें, अपने इर्द गर्द होने वाले गलत के प्रति सदैव शकायत न करते रहें और उसके स्थान पर सही उज्ज्वल और रचनात्मक पर ध्यान दे सकें तो हम सचमुच अपने कार्य करने के ढंग और मानसकता में परिवर्तन परिवर्तन ला सकते हैं। महान देशों को अपनी सामाजिक समृद्ध को फर से वापस लाना होगा और पंक्ति के अंत में शामल करने के लए सामाजिक अभलाषाओं को पुन: परिभाषत करना होगा।

14. मैं आपके स्वाथ्यवर्द्धक, खुशहाल और सफल भवष्य की कामना करता हूं। आप हमारे समाज में रचनात्मक और ताकतों के साथ संलग्न रहें। इसी प्रकार से भारत न केवल वकसत होगा बल्कि बल्कि एक सचेत और साझेदार समाज बन सकेगा।

जय हिंद!